



## UNIVERSITY NEWS 07 OCTOBER 2025

### AMRIT VICHAR PAGE NO 8

## दुर्गड्रंग ग्लेशियर 165 मीटर और पेंसिलुंगपा 80 मीटर पीछे हटे

लखनऊ विश्वविद्यालय के भूविज्ञान विभाग के शोध में दावा, ग्लेशियर पिघलने से नदियों का जलस्तर बढ़ेगा, आबादी होगी प्रभावित

कार्यालय संचालदाता, लखनऊ

**अमृत विचार:** वैश्विक तापमान में हो रही बढ़ोतरी और जलवायु परिवर्तन का खतरनाक असर हिमालयी ग्लेशियरों पर देखा जा रहा है। विशेषज्ञ इसे लेकर गत तीन दशकों से चेतावनी देते रहे हैं लेकिन अब जलवायु परिवर्तन का संकेत बिलकुल दरवाजे पर दस्तक देने लगा है। ऐसा ही चेतावनी देने वाला शोध लखनऊ विश्वविद्यालय के भूविज्ञान विभाग ने किया है जिसमें ग्लेशियरों के तेजी से पिघलने का दावा किया गया है।



लखनऊ विश्वविद्यालय के

### जलवायु परिवर्तन से क्या होगा

- मनुष्य से लेकर जीवजंतुओं का पलायन
- केदारनाथ की चोटियों पर दिखने लगे मैदानी बंदर
- पहाड़ी क्षेत्रों में भी बिकने लगे एसी और कूलर
- खेती की प्रकृति होगी प्रभावित और फसल चक्र बदलेगा
- मौसम में अत्यधिक शीत, गर्मी और अनियमित तीव्र बरसात होगी
- बादल फटने और अन्य प्राकृतिक आपदाएं बढ़ेंगी
- मैदानी इलाकों में नदियों का जलस्तर बढ़ेगा, किनारे के गांव प्रभावित होंगे



शोध टीम में शामिल डॉ. विनीत कुमार

और हजारों गांव समेत करोड़ों की आबादी प्रभावित हो सकती है। विश्वविद्यालय के भूविज्ञानी डॉ. विनीत कुमार के एनवायरनमेंटल मॉनिटरिंग एंड एसेसमेंट में प्रकाशित अध्ययन में यह सामने आया है कि

लद्दाख के जांस्कर हिमालय में ऑफ हिमालयन जियोलाजी), डॉ. मनीष मेहता और प्रो. एचसी नैणवाल द्वारा किया गया।

इन क्षेत्रों में पिघल रहे ग्लेशियर :सुरू और डोडा

घाटियों में दुर्ग-ड्रंग और पेंसिलुंगपा ग्लेशियरों के अध्ययन में सामने आया कि 2015 से 2023 के बीच दुर्ग ड्रंग ग्लेशियर लगभग 165 मीटर और पेंसिलुंगपा ग्लेशियर लगभग 80 मीटर पीछे हट चुके हैं। ग्लेशियरों के पास बनी झीलों का आकार भी तेजी से बढ़ रहा है। प्रोग्लेशियल झील का क्षेत्रफल पिछले दो दशकों में 160 प्रतिशत बढ़ गया और जलस्तर लगभग दोगुना हो गया है। यह संकेत देता है कि ग्लेशियर पिघलने की गति बढ़ रही है, जिससे आसपास के क्षेत्रों में बाढ़ और अन्य जोखिम बढ़ सकते हैं।

### NBT PAGE NO 4

## LU में लेटरल एंट्री से दाखिले

यूजी, पीजी में आधी पढ़ाई दूसरे विवि से करने के बाद बीच में ले सकेंगे दाखिला

Zeeshan.Rayini@timesofindia.com

लखनऊ: लखनऊ विश्वविद्यालय में अब लेटरल एंट्री के तहत भी दाखिले लिए जाएंगे। विवि में संचालित होने वाले यूजी पीजी कोर्सों में दूसरे विश्वविद्यालय में पढ़ने वाले छात्र बीच कोर्स में एल्यू में दाखिला ले सकेंगे। विवि की अकेडमिक काउंसिल की ओर से लेटरल एंट्री को मंजूर कर लिया गया है। इसके तहत अगर यूजी व पीजी के किसी कोर्स में छात्र ने दूसरे विवि में पहले साल पढ़ाई की है तो दूसरे साल में वह एल्यू में आवेदन कर दाखिला ले सकेंगे। अब तक सिर्फ इंजिनियरिंग में ही लेटरल एंट्री से दाखिले का प्रावधान था। विवि में पहली बार इस व्यवस्था को लागू किया गया है जिससे छात्रों को काफी सहूलियत होगी।

विवि की डीन अकेडमिक्स प्रो. गीतांजलि मिश्र ने बताया कि लेटरल एंट्री के तहत दाखिले को मंजूर दे दी गई है। लेकिन इसके लिए कुछ व्यवस्था की गई है। हम दूसरी विवि के छात्रों को दाखिला देने जो न्यूनतम ए प्लस ग्रेड के होंगे। गुणवत्ता के लिहाज से इस क्लास को शामिल किया गया है। इसके अलावा उस विवि में न्यू एजुकेशन पॉलिसी को लागू है। चूंकि एल्यू में न्यू एजुकेशन पॉलिसी के तहत ही सारे पाठ्यक्रम संचालित किए जा रहे हैं। इसके अलावा कोर्स 20 क्रेडिट का हो ताकि दोनों जगह के क्रेडिट में समानता हो। इसके अलावा छात्र ने जितनी भी पढ़ाई उस विवि में की है उसके क्रेडिट अकेडमिक बैक क्रेडिट में होने चाहिए ताकि विवि उन क्रेडिट्स को यहां के कोर्स में काट कर सके।

**ऐसे ले सकेंगे दाखिले:** प्रो. गीतांजलि ने बताया कि विवि में ऐसे सभी छात्रों को एडमिशन सेल में सत्र की शुरुआत में आवेदन करना होगा। इसके बाद एडमिशन कमिटी की बैठक में सभी आवेदनों पर विचार किया जाएगा। जो सारी गाइडलाइन को पूरा करेंगे उनके दाखिले को मंजूर दी जाएगी। इसके लिए सेंट का निर्धारण या कोई आवेदन फॉर्म नहीं जारी किया जाएगा।

### एल्यू बना चैंपियन

■ **NBT न्यूज, लखनऊ:** लखनऊ जिला बास्केटबॉल असोसिएशन की देखरेख में रविवार शाम को गोमती नगर विनय खंड मॉडर्न अकेडमी स्थित एसएनआई (स्पोर्ट्स नेटवर्क इंडिया) में बास्केटबॉल 3x3 सुपर गोल्डन लीग का फाइनल मैच हुआ।

मैच में सीनियर वर्ग में एल्यू ने दबदबा बनाते हुए चैंपियन बना। सीनियर वर्ग के फाइनल मुकाबले में टीम एल्यू ने मैगो मस्ती के खिलाफ 19 अंक बंटोरे। मैगो मस्ती 14 बास्केट कर उपविजेता रहा। लीग में 32 टीमों ने हिस्सा लिया।

### HINDUSTAN PAGE NO 8

## अध्ययन: लद्दाख में लगातार तेजी से पिघल रहे ग्लेशियर

**लखनऊ।** लद्दाख में जांस्कर हिमालय के ग्लेशियर तेजी से पिघल रहे हैं। यह निष्कर्ष सुरू और डोडा घाटियों में दुर्ग-ड्रंग व पेंसिलुंगपा ग्लेशियर के अध्ययन में सामने आया। जिसे लखनऊ विवि के भूविज्ञान विभाग के डॉ. विनीत कुमार ने वाडिया इंस्टीट्यूट ऑफ हिमालयन जियोलाजी में वैज्ञानिक के

तौर पर डॉ. पंकज कुमार, डॉ. अजय सिंह राणा, डॉ. मनीष मेहता और प्रो. एचसी नैणवाल के साथ किया। अध्ययन एनवायरनमेंटल मॉनिटरिंग एंड एसेसमेंट में प्रकाशित हुआ है। डॉ. विनीत ने बताया कि 2015 से 2023 के बीच दुर्ग-ड्रंग ग्लेशियर 165 मीटर और पेंसिलुंगपा 80 मीटर पीछे हटे हैं।

### DAINIK JAGRAN AMAR UJALA PAGE NO 25 PAGE NO 7

## तेजी से पिघल रहे हैं हिमालय के ग्लेशियर

**लखनऊ।** हिमालय के बर्फीले पहाड़ और वहां की जमी बर्फ अब पहले से कहीं ज्यादा तेजी से पिघल रही है। यह जानकारी लखनऊ विश्वविद्यालय के भूविज्ञान विभाग के डॉ. विनीत कुमार के शोध में सामने आई है। उनके इस अध्ययन को अंतरराष्ट्रीय जर्नल एनवायरनमेंटल मॉनिटरिंग एंड एसेसमेंट ने प्रमुखता से छपा है।

डॉ. विनीत ने लद्दाख के जांस्कर हिमालय इलाके के दो बड़े ग्लेशियरों दुर्ग-ड्रंग और पेंसिलुंगपा का बारीकी से अध्ययन किया है। शोध में पाया गया कि साल 2015 से 2023 के बीच दुर्ग-ड्रंग ग्लेशियर करीब 165 मीटर और पेंसिलुंगपा ग्लेशियर लगभग 80 मीटर पीछे हट गए हैं। यानी बर्फ अब पहले से कहीं ज्यादा तेजी से पिघल रही है।

ग्लेशियरों के पास बनी झीलों का आकार भी तेजी से बढ़ रहा है। दुर्ग-ड्रंग ग्लेशियर के पास की झील 20 सालों में 160 फीसदी बढ़ी हो चुकी है और उसका जलस्तर लगभग दोगुना हो गया है। (माई सिटी रिपोर्टर)

## दुर्ग-ड्रंग ग्लेशियर 165 मीटर पीछे हटे

जैसे • **लखनऊ :** लद्दाख के जांस्कर हिमालय क्षेत्र में ग्लेशियर के तेजी से पिघल रहे हैं। 2015 से 2023 के बीच दुर्ग-ड्रंग ग्लेशियर लगभग 165 मीटर और पेंसिलुंगपा ग्लेशियर लगभग 80 मीटर पीछे हट चुके हैं। लवि के भूविज्ञान विभाग के सहायक प्राध्यापक डा. विनीत कुमार, डा. पंकज कुमार, डा. अजय राणा, डा. मनीष मेहता और डा. एचसी नैणवाल के संयुक्त अध्ययन में ये तथ्य सामने आए हैं।

डा. विनीत ने बताया कि टीम ने सुरू और डोडा घाटियों में दुर्ग-ड्रंग और पेंसिलुंगपा ग्लेशियरों का अध्ययन किया। ग्लेशियरों के पास बनी झीलों का आकार तेजी से बढ़ रहा है। दुर्ग-ड्रंग के पास प्रोग्लेशियल झील का क्षेत्रफल पिछले दो दशकों में 160 प्रतिशत बढ़ गया और जलस्तर लगभग दोगुना हो गया है। यह संकेत है कि ग्लेशियर पिघलने की गति बढ़ रही है।

### TOI PAGE NO 1

## Melting of Zaskar Valley glaciers a climate change alarm, says LU study

Anjanaya Singh | TNN

**Lucknow:** The mighty glaciers of the Zaskar Himalaya, Ladakh, Durung-Drung (DDG) and Pensilungpa (PG), are retreating at an alarming pace, painting a stark picture of climate change in India's high mountains.

A recent study conducted jointly by the Wadia Institute of Himalayan Geology and Lucknow University has tracked these glaciers between 2015 and 2023, revealing a significant loss of ice mass and an expansion of glacial lakes that threaten both ecosystems and human settlements downstream.

### WARNING SIGNS

- The retreat rate of these glaciers has doubled in the last 8 yrs, between 2015 and 2023
- The Durung-Drung Glacier has retreated by about 165m in just 8 years
- The Pensilungpa Glacier has retreated by around 80m between 2015 and 2023



- Rising temperatures, industrial emissions have contributed to the melting of these glaciers
- Experts say that without immediate mitigation, the loss of these glaciers will have cascading effects on water availability, agriculture, and disaster vulnerability

The research highlights that the retreat rate of these glaciers has doubled in the last eight years and was recently published in the peer-reviewed international journal Environmental Monitoring and Assessment.

► **Rising temp, P 8**

### TOI PAGE NO 8

## Rising temperature, less snowfall & long summers raising concerns

► Continued from P 1

The Durung-Drung Glacier, stretching nearly 23 kilometers long, has retreated by about 165 meters in just eight years. This translates to an average retreat rate of 21 meters per year, almost double the 12 meters per year recorded before 2015. Scientists also found that the glacier was once 350 meters thicker, as indicated by ancient moraine deposits now exposed along its flanks.

Similarly, the Pensilungpa Glacier has retreated by around 80 meters between 2015 and 2023, with its retreat rate nearly doubling from 5-6 meters to about 10 meters per year. Geological evidence suggests that this glacier was previously 170 meters thicker than its current state. As the glaciers shrink, nearby lakes are expanding rapidly. Proglacial lakes in front of DDG have grown by



CLIMATE CHANGE ALARM

164% in area and 190% in water volume between 2004 and 2023, while periglacial lakes near Pensila Pass have expanded by 6.5% in area and 7% in volume.

This rapid swelling of glacial lakes raises serious concerns about the potential for glacial lake outburst floods (GLOFs), sudden, catastrophic events that can devastate downstream valleys. Experts attribute this accelerated melting to a combination of factors, including rising temperatures, declining snowfall, and longer summers in high-altitude zones. Dust and soot deposits from

vehicles and industrial emissions darken glacier surfaces, increasing heat absorption. Changing precipitation patterns, where rain increasingly replaces snow, are hastening the melting process.

According to Vinit Kumar, associate professor, department of geology, Lucknow University, said, "What we are witnessing in Zaskar is not an isolated event. It's part of a broader Himalayan trend. Without immediate mitigation, the loss of these glaciers will have cascading effects on water availability, agriculture, and disaster vulnerability."

Researchers recommend urgent measures such as reducing pollution and vehicular emissions, continuous glacier monitoring through satellite and field studies, and installing early warning systems to detect potential lake outburst floods.